नईदुनिया

रनवे लांघकर सड़क पर दौड़े विमान ने 5 को रौंद डाला, मौत

वाशिंगटन

संयुक्त राज्य अमेरिका के मियामी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एक भयानक विमान हादसा हो गया। प्यूर्टो रिको के सैन जुआन से आया अमेजन का एक मालवाहक विमान दोपहर लगभग दो बजे लैंडिंग के बाद रनवे से आगे निकल गया। विमान अनियंत्रित होकर सड़क पर चला गया और कई लोगों को कुचलते हुए उसने वाहनों को टक्कर मार दी। उसके बाद उसमें भीषण आग लग गई। इस दर्दनाक दुर्घटना में कम से कम पांच लोगों की मौत हो गई, जबकि कई अन्य घायल हुए हैं।

मियामी-डेड काउंटी के अधिकारियों ने एक संवाददाता सम्मेलन में बताया कि इस हादसे में पांच लोगों ने अपनी जान गंवाई, तीन लोग गंभीर रूप से घायल हुए और दो अन्य को अपेक्षाकृत कम गंभीर चोटें आईं, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। अधिकारियों ने अभी यह स्पष्ट नहीं किया है कि मारे गए लोग विमान में सवार थे या उन वाहनों में, जिनसे विमान टकराया। मियामी-डेड बचाव अग्निशमन प्रमुख रे जडाल्ला ने बताया कि हादसे के तुरंत बाद आसमान में घना काला धुआं छा गया और स्थिति भयावह थी। पायलट और सह-पायलट काकपिट में फंसे हुए थे, जबकि कुछ लोग अपनी कारों के अंदर फंसे मिले। एक अन्य व्यक्ति तो एक वाहन के नीचे दब गया था, जिसे निकालने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। हादसे के कारण मियामी के व्यस्त हवाई अड्डे पर दोपहर के समय उड़ानों को अस्थायी रूप से रोकना पड़ा, जिससे यात्रियों को खासी परेशानी का सामना करना पड़ा।

जडाल्ला ने यह भी बताया कि हादसे के कई घंटों बाद भी विमान से ईंधन का लगातार रिसाव हो रहा था, जिससे दमकलकर्मी आग बुझाने और स्थिति को नियंत्रित करने में जुटे रहे, क्योंकि ईंधन के कारण आग फिर से भड़कने का खतरा बना हुआ था। यह दुर्भाग्यपूर्ण उड़ान नार्थ कैरोलाइना स्थित मालवाहक विमानन कंपनी 21 एयर द्वारा संचालित की गई थी। उड़ान पर नजर रखने वाली वेबसाइट के अनुसार, यह 32 साल पुराना बोइंग 767 विमान था, जिसे मूल रूप से यात्रियों को ले जाने के लिए बनाया गया था। इसने दो दशकों से अधिक समय तक कई विमानन कंपनियों के लिए उड़ान भरी, जिसके बाद 2015 में इसे मालवाहक विमान में परिवर्तित कर दिया गया था।

राष्ट्रीय परिवहन सुरक्षा बोर्ड (एनटीएसबी) ने इस हादसे की गहन जांच के लिए मियामी में एक टीम भेजने की घोषणा की है, जिसकी अगुवाई बोर्ड की अध्यक्ष जेनिफर होमेंडी करेंगी। अमेजन ने एक बयान जारी कर कहा कि वह किसी भी जांच में पूरा सहयोग करने के लिए तैयार है।

कंपनी ने दुख व्यक्त करते हुए कहा, हमें यह जानकर बेहद दुख हुआ कि मियामी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर हुई इस घटना में पांच लोगों की जान चली गई। हम इस हादसे में मारे गए लोगों के परिवारों, उनके प्रियजनों और इस दुखद घटना से प्रभावित सभी लोगों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करते हैं। इस दुखद घटना ने हवाई अड्डे की सुरक्षा और आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणालियों पर नए सिरे से सवाल खड़े कर दिए हैं।

न्यूज ब्रीफ

ओसाका के विशाल गेट रोकते है समुद्र और नदियों के बाढ़ के पानी को

टोक्यो। जापान के ओसाका शहर की एक ऐसी इंजीनियरिंग व्यवस्था भी है, जो किसी साइंस-फिक्शन फिल्म के दृश्य जैसी नजर आती है। ओसाका शहर अपनी आधुनिक इमारतों, व्यस्त सड़कों और तकनीकी विकास के लिए जाना जाता है। इस शहर में बनाए गए विशाल फ्लडगेट यानी बाढ़ रोधी गेट समुद्र और नदियों से आने वाले पानी के खतरे को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ओसाका समुद्र के बेहद करीब स्थित है और यहां कई नदियां तथा जलमार्ग मौजूद हैं। यही वजह है कि तूफान, ऊंचे ज्वार और समुद्री जलस्तर बढ़ने के दौरान शहर के कई इलाकों में बाढ़ का खतरा पैदा हो सकता है। ऐसे हालात से निपटने के लिए शहर में व्यापक बाढ़ नियंत्रण व्यवस्था विकसित की गई है, जिसमें ये विशाल गेट भी शामिल हैं। सामान्य परिस्थितियों में इन जलमार्गों से पानी का प्रवाह जारी रहता है। लेकिन जब तूफान या समुद्री जलस्तर बढ़ने का खतरा होता है, तब जरूरत के अनुसार गेट बंद किए जा सकते हैं। बंद होने के बाद ये भारी स्टील संरचनाएं पानी के लिए मजबूत अवरोध का काम करती हैं और संवेदनशील शहरी इलाकों में बाढ़ का पानी पहुंचने का खतरा कम करने में मदद करती हैं। दूर से देखने पर ये गेट किसी विशाल लोहे की दीवार जैसे दिखाई देते हैं, लेकिन इनके पीछे बेहद जटिल इंजीनियरिंग काम करती है। इन्हें पानी के दबाव, बहाव की गति, समुद्री लहरों और संभावित तूफानी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया जाता है। गेट का आकार, वजन, मजबूती और संचालन प्रणाली सभी बाढ़ नियंत्रण की जरूरतों के हिसाब से तैयार किए जाते हैं। ओसाका की यह व्यवस्था वर्षों में विकसित हुई है।

पाकिस्तान में सैन्य शक्ति का नया केंद्रः आसिम मुनीर को मिले अभूतपूर्व अधिकार

इस्लामाबाद। पाकिस्तान ने दशकों बाद अपने सैन्य कमांड इंफ्रास्ट्रक्चर में ऐतिहासिक बदलाव किया है,

इसके तहत फील्ड मार्शल आसिम मुनीर को बड़े पैमाने पर अधिकार सौंपे गए हैं। इस कदम से देश के सिविल-मिलिट्री संतुलन पर गहरा असर पड़ने वाला है। रिपोर्टों के अनुसार, पाकिस्तान में अब तक थल सेना, नौसेना और वायु सेना की कमान अलग-अलग सैन्य अधिकारियों के पास थी। जाइंट चीफ्स के चेयरमैन उनके बीच केवल तालमेल बिठाते थे, लेकिन तीनों सेनाओं की सीधी कमान उनके हाथ में नहीं थी। इस पुरानी व्यवस्था को बदलते हुए, 2025 में संविधान संशोधन के जरिए चीफ आफ डिफेंस फोर्सेज (सीडीएफ) का नया पद सृजित किया गया है और पुराने पद को समाप्त किया गया है। मुनीर के चीफ आफ डिफेंस फोर्सेज बनने के बाद, सशस्त्र बलों की आपरेशनल कमान और कंट्रोल अब सीधे उनके हाथों में होगी। इस बदलाव से एक ही अधिकारी को तीनों सेनाओं पर अभूतपूर्व अधिकार मिले हैं। सीडीएफ की ताकत परमाणु फैसले लेने की प्रक्रिया तक विस्तृत हो जाती है। देश के प्रधानमंत्री नेशनल कमांड अथारिटी के प्रमुख होते हैं, जो पाकिस्तान के परमाणु हथियारों की देखरेख करती है। उम्मीद है कि सीडीएफ इसके डिप्टी चेयरमैन बन सकते है। इसके अतिरिक्त, पाकिस्तान की परमाणु क्षमता वाली सेनाओं की देखरेख करने वाले नेशनल स्ट्रैटेजिक कमांड के कमांडर की नियुक्ति भी सीडीएफ की सिफारिश पर होगी।

बाढ़ प्रभावित नेपाल को अतिरिक्त सहायता उपलब्ध कराने को अमेरिका तैयारः मार्को रुबियो

काठमांडू। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने नेपाल की सत्तारूढ़ राष्ट्रीय स्वतन्त्र पार्टी

(आरएसपी) के अध्यक्ष रवि लामिछाने से टेलीफोन पर बात की और विनाशकारी बाढ़ में हुई जानमाल की क्षति के लिए सांत्वना देते हुए नेपाल सरकार के प्रति एकजुटता जताई। रुबियो ने कहा कि अमेरिका विनाशकारी बाढ़ से प्रभावित नेपाल को अतिरिक्त सहायता उपलब्ध कराने के लिए तैयार है। आरएसपी के अनुसार रुबियो ने बाढ़ में जान गंवाने वालों के प्रति शोक व्यक्त किया और इस कठिन समय में नेपाली जनता तथा नेपाल सरकार के प्रति एकजुटता जताई। रुबियो ने कहा कि अमेरिका नेपाल को अतिरिक्त सहायता उपलब्ध कराने के लिए तैयार है। बातचीत के दौरान लामिछाने ने कहा कि उनकी पार्टी बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में सरकार द्वारा जारी खोज, बचाव और राहत कार्यों में सहयोग के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। उन्होंने रुबियो को आश्वस्त किया कि हाल की बाढ़ से प्रभावित विदेशी नागरिकों की सुरक्षा और संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए नेपाल प्रतिबद्ध है। लामिछाने ने आपदा के दौरान सहायता एवं सहयोग प्रदान करने के लिए अमेरिकी सरकार का आभार जताया।

होर्मुज की जलसमाधि : दुनिया की आर्थिक तबाही की आहट

तेहरान

फारस की खाड़ी का नीला पानी इन दिनों खौल रहा है। दुनिया की रगों में ऊर्जा पंप करने वाली सबसे बड़ी महाधमनी यानी होर्मुज जलडमरूमध्य पर एक बार फिर ऐसा पहरा बैठा है, जिसने ग्लोबल इकानमी की सांसें अटका दी हैं। इसे महज़ अमेरिका और ईरान के बीच वर्चस्व की एक और लड़ाई मान लेना एक बड़ी भूल होगी। यह उस भू-राजनीतिक ड्रामे का नया अंक है, जहां शांति वार्ता केवल एक छलावा साबित हुई है, और असली पटकथा हथियारों की भाषा में लिखी जा रही है। कुछ समय पहले तक दुनिया को यह उम्मीद बंधाई गई थी कि अमेरिका और ईरान के बीच कूटनीतिक चैनल खुल रहे हैं।

वाशिंगटन और तेहरान के बीच पर्दे के पीछे शांति की बयार बहने की सुगबुगाहट थी, लेकिन यह उम्मीद उतनी ही कच्ची निकली जितनी रेगिस्तान की रेत। अड़ियल रुख दोनों तरफ से है। अमेरिकी नौसेना द्वारा ईरानी जहाजों को निशाना बनाए जाने के दावों ने पहले ही तनाव की चिनगारियां बिखेर दी थीं, और अब इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कार्प्स के ताजा वीडियो ने आग में घी डालने का काम किया है। ईरान ने जिस आक्रामकता के साथ होर्मुज में छह जहाजों को रोकने और उनमें से तीन अमेरिकी जहाजों को खास तौर पर घेरने का फुटेज जारी किया है, वह सिर्फ एक सैन्य कार्रवाई नहीं, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक वार है। तेहरान ने दुनिया को यह संदेश साफ-साफ दे दिया है कि इस समुद्री गलियारे का सिकंदर कौन है।

ईरान ने साफ कर दिया है कि जो भी जहाज अमेरिकी निर्देशों पर चलेंगे, उन्हें खाड़ी में गंभीर परिणाम भुगतने होंगे, यानी न्यूट्रल रहने का विकल्प भी अब खत्म कर दिया गया है। आईआरजीसी ने अमेरिकी सुरक्षा व्यवस्था को छलावा करार देकर सीधे तौर पर महाशक्ति को चुनौती दी है, और तेहरान ने अमेरिकी हमलों को युद्ध अपराध तथा यूएन चार्टर का उल्लंघन बताकर कूटनीतिक मोर्चे पर भी अमेरिका को घेरने की चाल चल दी है। होर्मुज जलडमरूमध्य कोई आम समुद्री रास्ता नहीं है। यह वह संकीर्ण गलियारा है जिस पर एशिया से लेकर यूरोप तक की ऊर्जा सुरक्षा टिकी हुई है। वैश्विक तेल और एलपीजी की एक बहुत बड़ी मात्रा इसी रास्ते से होकर दुनिया के बाजारों में पहुंचती है।

ईरान से जंग खत्म होते ही 40 डालर तक गिर सकती हैं तेल की कीमतें, अमेरिका के ट्रेजरी सेक्रेटरी बेसेंट ने किया दावा, हाल के हफ्तों में कीमतों में आई तेजी

वाशिंगटन। अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी स्काकट बेसेंट का मानना है कि ईरान के साथ जंग खत्म होने के बाद तेल की कीमतों में भारी गिरावट आएगी। ये कीमत गिरक 40 डालर प्रति बैरल तक गिर सकती हैं। उनका मानना है कि इस गिरावट से महंगाई का दबाव कम हो सकता है और हाल ही में हुई बढ़ोतरी के बाद अमेरिकी बान्ड यील्ड में भी भारी गिरावट आ सकती है। एक इंटरव्यूह में बेसेंट ने कहा कि ईरान संघर्ष के समाधान के बाद तेल बाजार में काफी ज्यादा आपूर्ति हो सकती है। हम इस संघर्ष के दूसरे पक्ष में पहुंच जाएंगे और मुझे उम्मीद है कि तेल की कीमतों में गिरावट आएगी। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक उन्होंने कहा कि उत्पोदन में बढ़ोतरी से कच्चे तेल की कीमतें 50 डालर या यहां तक कि 40 डालर प्रति बैरल तक पहुंच सकती हैं। हालांकि उन्होंयने यह नहीं बताया कि जंग कब खत्मक होगी। यह बयान ऐसे समय में आया हैं जब अमेरिका और ईरान के बीच सैन्य टकराव का असर ऊर्जा बाजारों पर लगातार पड़ रहा है। बता दें ब्रेंट क्रूड 95 डालर प्रति बैरल से ऊपर कारोबार कर रहा था, जो जुलाई के बाद से अपने उच्चतम स्तर के करीब है, जबकि वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट करीब 91 डालर पर था। अमेरिका और ईरान के बीच सैन्य हमलों के बाद हाल के हफ्तों में तेल की कीमतों में तेजी आई है। इस बढ़ोतरी ने महंगाई को लेकर चिंताओं को और बढ़ा दिया है, खासकर इसलिए क्योंकि ऊर्जा की बढ़ती लागत कंज्यूटमर कीमतों को प्रभावित कर सकती है। महंगाई की बढ़ती उम्मीदों ने सरकारी बान्ड यील्ड में भी बढ़ोतरी की है। इस सप्ताह अमेरिकी 10-साल के ट्रेजरी यील्ड 2023 के बाद से अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है। बेसेंट ने कहा कि तेल की कीमतों, महंगाई और ब्याडज दरों के बीच संबंध अब स्परष्ट हो चुका है। ईरान के साथ जंग खत्मय होते ही तेल की कीमतें तेजी से नीचे आएंगी और महंगाई कम होगी।

रेनडियर का दूध पीता हैं मंगोलिया का दुखा समुदाय अनोखी है जीवनशैली

उलानबाटर

मंगोलिया की कठोर और बेहद ठंडी जलवायु में रहने वाला दुखा समुदाय अपनी अनोखी जीवनशैली के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। यह समुदाय गाय, भैंस या बकरी के बजाय रेनडियर यानी हिरन की एक विशेष प्रजाति पालता है और उसके दूध का इस्तेमाल अपने भोजन में करता है। रेनडियर का वैज्ञानिक नाम रंगिफर टारंडस है। इसे हिंदी में कई बार बारहसिंघा कहा जाता है, हालांकि दोनों को एक ही जानवर मानना वैज्ञानिक रूप से सही नहीं है। दुखा या त्सातान समुदाय मुख्य रूप से मंगोलिया के खोव्सगोल प्रांत के जंगली और पहाड़ी इलाकों में घुमंतू जीवन जीता है। रेनडियर इनके जीवन का अहम हिस्सा हैं। इनका इस्तेमाल दूध, परिवहन और ऊन के लिए किया जाता है।

समुदाय की महिलाएं आमतौर पर दूध निकालने का काम करती हैं। सुबह बछड़ों को कुछ समय के लिए अलग रखा जाता है, ताकि मां का दूध जमा हो सके। इसके बाद दोपहर के समय रेनडियर का दूध निकाला जाता है और पर्याप्त दूध बछड़े के लिए भी छोड़ दिया जाता है। रेनडियर का दूध सामान्य गाय के दूध की तुलना में अधिक गाढ़ा माना जाता है और इसमें वसा तथा प्रोटीन की मात्रा अच्छी होती है। ठंडे वातावरण में रहने वाले लोगों के लिए यह ऊर्जा का महत्वपूर्ण स्रोत है। दुखा समुदाय इस दूध से चाय, दही और पनीर जैसी चीजें तैयार करता है। इससे ब्रेड भी बनाई जाती है, जिसे रेनडियर मिल्क ब्रेड के रूप में जाना जाता है। दूध को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए प्राकृतिक ठंडे वातावरण का भी इस्तेमाल किया जाता है। इस समुदाय की रेनडियर के प्रति सोच भी बेहद अलग है। जानवरों को केवल भोजन का साधन नहीं माना जाता, बल्कि परिवार का हिस्सा समझा जाता है। इसलिए उन्हें सामान्य तौर पर मांस के लिए नहीं मारा जाता।

भोजन के लिए समुदाय दूध और उससे बने उत्पादों के अलावा जंगल से मिलने वाले दूसरे संसाधनों और शिकार पर निर्भर रहता है। दुखा समुदाय का जीवन हालांकि बेहद चुनौतीपूर्ण है। कड़ाके की ठंड, चारे की उपलब्धता, भेड़ियों से रेनडियर की सुरक्षा और आधुनिक सुविधाओं से दूरी उनके सामने बड़ी मुश्किलें पैदा करती हैं। इसके बावजूद समुदाय अपनी सदियों पुरानी परंपराओं को बचाए रखने में जुटा है। युवा पीढ़ी को रेनडियर पालने, दूध निकालने और उससे डेयरी उत्पाद तैयार करने की पारंपरिक तकनीक सिखाई जाती है। मंगोलिया में घोड़े, ऊंट, याक, भेड़ और बकरी का दूध भी इस्तेमाल किया जाता है।

अफगानिस्तान में 4.1 तीव्रता का भूकंप, नुकसान की सूचना नहीं

काबुल। अफगानिस्तान में भूकंप के झटके महसूस किए गए। भारत के राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के अनुसार, रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 4.1 मापी गई। इसका केंद्र 36.114 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 70.820 डिग्री पूर्वी देशांतर पर 130 किलोमीटर की गहराई में था। केंद्र ने कहा कि भूकंप से किसी तरह के जानमाल के नुकसान की जानकारी भी सामने नहीं आई है। अफगानिस्तान के अखबार हश्त-ए-सुब्ह डेली की यूएस जियोलाजिकल सर्वे (यूएसजीएस) के हवाले से प्रसारित एक रिपोर्ट के अनुसार, इससे पहले एक सितंबर को ताखर प्रांत के फरखार जिले में भूकंप आ चुका है। रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 4.4 थी। दो सितंबर को तड़के भी राजधानी काबुल समेत देश के कुछ हिस्सों में भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। अफगानिस्तान भौगोलिक स्थिति के कारण भूकंप के लिहाज से अत्यधिक संवेदनशील है। पिछले साल 31 अगस्त/ 01 सितंबर की रात पूर्वी अफगानिस्तान के नंगरहार प्रांत (जलालाबाद के पास) और कुनार में आए 6.0 तीव्रता के भूकंप से भारी तबाही हुई थी। इस आपदा में 2,200 से अधिक लोगों की मौत हो गई और 3,600 से अधिक लोग गंभीर रूप से घायल हुए।

सात दशक पूर्व कार में बच्चों की सीटों का डिजाइन था बिल्कुल अलग

लंदन

1950 के दशक की बच्चों के लिए कार में सीटों को लेकर सुरक्षा से ज्यादा खुली हवा और बेहतर नजारे पर जोर दिया जाता था लेकिन आज हालात बिलकुल बदल चुके है। करीब सात दशक पहले बच्चों की कार सीटों का डिजाइन आज की सुरक्षा सोच से बिल्कुल अलग था। 1930 से 1960 के दशक के बीच इस्तेमाल होने वाली शुरुआती कार सीटें काफी साधारण होती थीं। कई माडल मेटल फ्रेम से बने होते थे, जिन्हें कार की सीट पर हुक या स्ट्रैप की मदद से लगाया जाता था। इनमें बच्चे को ऊंचा बैठाने और बाहर का नजारा दिखाने पर ज्यादा ध्यान दिया जाता था। कुछ सीटों में बच्चे के मनोरंजन के लिए खिलौने जैसा डैशबोर्ड, स्टीयरिंग व्हील और गियर शिफ्टर तक लगाए जाते थे।

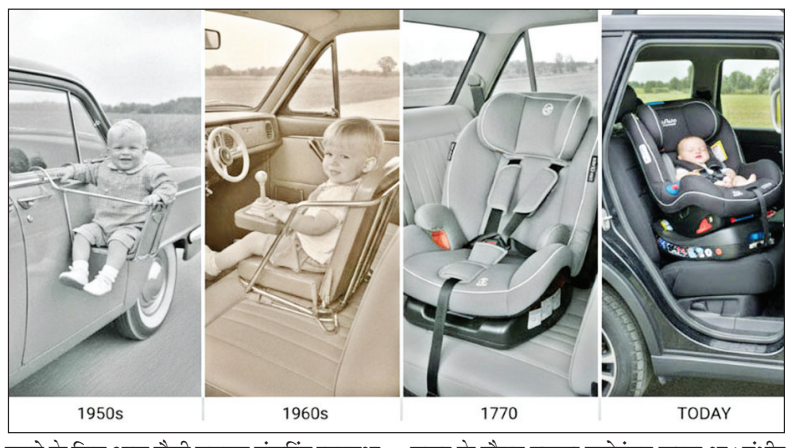

कई माडलों में साधारण लैप बेल्ट जरूर होती थी, लेकिन दुर्घटना के दौरान बच्चे को सुरक्षित रखने के लिए आज जैसी मजबूत एंकरिंग व्यवस्था नहीं थी। 1950 के दशक से जुड़ी कुछ ऐतिहासिक तस्वीरों में कार के दरवाजे के बाहर मेटल फ्रेम वाली सीटें भी दिखाई देती हैं। इन सीटों को दरवाजे पर हुक की तरह लगाया जाता था, जिससे बच्चा खुले वातावरण में बैठकर आसपास के दृश्य देख सके। हालांकि, इन तस्वीरों को देखकर यह निष्कर्ष निकालना सही नहीं होगा कि ऐसी सीटों का ड्राइविंग के दौरान बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होता था। ऐसी तस्वीरों के कई संदर्भ स्पष्ट नहीं हैं और सोशल मीडिया पर वायरल होने वाली कुछ तस्वीरें एआई से बनाई गई या गलत संदर्भ के साथ साझा की गई पाई गई हैं। उस दौर में कार सीटों का मुख्य उद्देश्य बच्चे को कार में स्थिर रखना, ऊंचा बैठाना और सफर के दौरान उसका मनोरंजन करना था। गंभीर टक्कर की स्थिति में सुरक्षा को लेकर आज जैसी वैज्ञानिक समझ और तकनीक उपलब्ध नहीं थी।

दुर्घटना होने पर सीट के खिसकने या मुड़ने का खतरा रहता था। 1960 और 1970 के दशक में बच्चों की सुरक्षा को लेकर शोध और क्रैश टेस्टिंग बढ़ने लगी। इंजीनियरों ने महसूस किया कि सिर्फ बच्चे को ऊंचा बैठाना पर्याप्त नहीं है। इसके बाद मजबूत शेल, बेहतर हार्नेस और सुरक्षित इंस्टालेशन सिस्टम विकसित किए गए। आज की कार सीटों में फाइव-पाइंट हार्नेस, साइड-इम्पैक्ट प्रोटेक्शन, एनर्जी-अब्जार्बिंग फोम, मजबूत प्लास्टिक और मेटल फ्रेम के साथ आईएसओफिक्स या लैच सिस्टम जैसी तकनीक इस्तेमाल होती है।

चीन के नास्त्रेदमस की 2027 के लिए पांच डरावनी भविष्यवाणियां

बीजिंग

चीन के एक प्रोफेसर जियांग श्येछिन को उनके समर्थक चीन का नास्त्रेदमस कहते हैं। इसकी वजह उनकी कुछ पुरानी भविष्यवाणियां हैं, जिनके बाद दावा किया गया कि उनकी बातें आगे चलकर सही साबित हुईं। अब जियांग ने साल 2027 को लेकर ऐसी भविष्यवाणियां की हैं, जिनमें ईरान युद्ध से लेकर अमेरिका में आर्थिक तबाही और गृहयुद्ध जैसे हालात तक का दावा किया गया है। जियांग श्येछिन एक चीनी-कनाडाई शिक्षक और राजनीतिक टिप्पणीकार हैं। उन्होंने पहले दावा किया था कि डोनाल्ड ट्रंप 2024 का अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव जीतेंगे। इसके अलावा, उन्होंने यह भी कहा था कि ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में अमेरिका और इजरायल ईरान के साथ युद्ध में शामिल होंगे, जो बात सही साबित हुई। अब उनका कहना है कि ईरान युद्ध आने वाले समय में और भी खतरनाक रूप ले सकता है, जिसका प्रभाव वैश्विक स्तर पर दिखाई देगा।

जियांग के मुताबिक, ईरान की स्थिति आगे चलकर एक पूर्ण युद्ध में बदल सकती है, जो केवल हवाई हमलों तक सीमित नहीं रहेगा। उनका दावा है कि हालात ऐसे बनेंगे कि अमेरिका को ईरान में जमीनी सैनिक उतारने पड़ सकते हैं, जिससे यह संघर्ष एक लंबी और खर्चीली जंग में बदल जाएगा। इसके बाद अमेरिका लंबे समय तक पश्चिम एशिया के इस संघर्ष में बुरी तरह फंस सकता है। उन्होंने अप्रैल 2026 में एक पाडकास्ट में कहा था कि अगर ईरान में अमेरिकी जमीनी अभियान शुरू हुआ, तो चार साल तक वहाँ फंसे रहना भी कम अनुमान होगा। उनके मुताबिक, यह संघर्ष 10 से 20 साल तक भी चल सकता है, जिसका अमेरिका और वैश्विक स्थिरता पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। जियांग ने इससे आगे एक और बड़ा और गंभीर दावा किया है। उनका कहना है कि ईरान में बड़ी संख्या में अमेरिकी सैनिकों की जरूरत पड़ने पर अमेरिका में अनिवार्य सैन्य भर्ती की व्यवस्था फिर से शुरू हो सकती है, जो लंबे समय से बंद है। उनके मुताबिक, 2027 तक इसकी रूपरेखा तैयार हो सकती है और 18 साल की उम्र के युवाओं को भी सेना में सेवा देने के लिए बुलाया जा सकता है। यह अमेरिकी समाज में एक बड़ा बदलाव लाएगा और नागरिक स्वतंत्रता पर भी सवाल खड़े करेगा।

जियांग ने अमेरिका के अंदर भी बड़े बदलाव की भविष्यवाणी की है। उनका दावा है कि आने वाले समय में इमिग्रेशन एंड कस्टम्स इंफोर्समेंट यानी आईसीई की ताकत बढ़ सकती है और उसका असर अमेरिका के बड़े शहरों में ज्यादा दिखाई देगा, जिससे अप्रवासन नीतियों में और सख्ती आएगी। उन्होंने यह भी दावा किया कि आर्थिक संकट से निपटने की तैयारी के तहत नेशनल गार्ड को अमेरिका के बड़े शहरों में तैनात किया जा सकता है, जो संभावित नागरिक अशांति या आपातकालीन स्थितियों का संकेत देता है। जियांग की भविष्यवाणियों में सबसे बड़ा और चौंकाने वाला दावा अमेरिकी और वैश्विक अर्थव्यवस्था को लेकर है।